तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीद्ँ सर्वं दहेयं यदिदं पृथिव्यामिति।।५।।

ब्रह्म ने पूछा ''तुममें कौन-सी शक्ति है?'' अग्नि ने उत्तर दिया ''इस भूमण्डल में जो-कुछ भी है, मैं उसे जला सकता हूँ।''

ॐ

शिक्षा जीवन का प्रशिक्षण है। इसमें नैतिकता की भूमिका प्रमुख है। नैतिक अनुशासन के बिना शिक्षा मानव-विकास के लिए घातक है तथा स्वार्थी तत्त्वों को जन्म देती है। **स्वामी शिवानन्द**

ॐ

दानशीलता मात्र रुपये, डालर, शिलिंग आदि देने तक सीमित नहीं है। दुःखी जनों का विचार करें और उनके लिए प्रार्थना करें। यह भी दान है। धन देने की अपेक्षा इससे अधिक कल्याण होगा। परन्तु दान देने का सर्वोत्तम स्वरूप हैह्नह्नविद्या का दान देना, दूसरों को शिक्षित करना। **स्वामी शिवानन्द**

ब्रह्मचर्य-साधना :

ब्रह्मचर्य एकाग्रता को प्रोत्साहन देता है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होने से ओज की प्राप्ति होती है। पूर्ण शारीरिक तथा मानसिक ब्रह्मचर्य की प्राप्ति द्वारा योगी सिद्धि प्राप्त करता है। यह दिव्य ज्ञान तथा अन्य सिद्धियों को प्राप्त करने में उसकी सहायता करता है। शुचिता (ब्रह्मचर्य) होने पर मन की वृत्तियों का अपक्षय नहीं होता है। मन को एकाग्र करना सहज हो जाता है। एकाग्रता तथा शुचिता साथ-साथ रहते हैं। यद्यपि ज्ञानी व्यक्ति इने-गिने शब्द ही बोलता है; किन्तु इसका श्रोताओं के मन पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। इसका कारण उसकी ओज-शक्ति है जो वीर्य के परिरक्षण तथा उसके रूपान्तरण द्वारा सुरक्षित रखी जाती है।

विचार, वाणी तथा कर्म से सच्चे ब्रह्मचारी में असाधारण विचार-शक्ति होती है। वह संसार को हिला सकता है। यदि आप पूर्ण ब्रह्मचर्य का विकास करते हैं, तो विचार-शक्ति तथा धारणा-शक्ति विकसित होगी। विचार-शक्ति वह शक्ति है, जिसकी सहायता से विचार किया जाता है तथा धारणा-शक्ति वह शक्ति है, जिससे सद्-वस्तु मन में धारण की जाती है। यदि व्यक्ति अपनी निम्न प्रकृति के समक्ष झुकने से निरन्तर इनकार करता है तथा पूर्ण ब्रह्मचारी बना रहता है, तो वीर्य-शक्ति मस्तिष्क की ओर मुड़ जाती है और ओज-शक्ति के रूप में वहाँ संचित रहती है। इसके द्वारा ज्ञान-शक्ति असाधारण मात्रा में तीव्र होती है। ब्रह्मचर्य से बुद्धि कुशाग्र तथा निर्मल होती है। ब्रह्मचर्य तीव्र स्मरण-शक्ति की अपरिमित मात्रा में वृद्धि करता है। पूर्ण ब्रह्मचारी की स्मरण-शक्ति वृद्धावस्था में भी सूक्ष्म तथा तीव्र होती है।

जिस व्यक्ति में ब्रह्मचर्य की शक्ति है, वह अपरिमित शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न कर सकता है। उसके मुख-मण्डल पर चुम्बकीय आभा होती है। वह अल्प शब्द बोल कर अथवा अपनी उपस्थिति मात्र से लोगों को प्रभावित कर सकता है। वह क्रोध को वश में कर सकता है तथा सम्पूर्ण जगत् हो हिला सकता है। महात्मा गान्धी को देखिए। उन्होंने इसे अहिंसा, सत्य तथा ब्रह्मचर्य के निरन्तर तथा अवधानपूर्ण अभ्यास द्वारा प्राप्त किया था। उन्होंने केवल इस शक्ति द्वारा संसार को प्रभावित किया। आप एकमात्र ब्रह्मचर्य के द्वारा ही इस जीवन में शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं।

यहाँ यह बात दोहराने योग्य है कि एक सच्चा ब्रह्मचारी अत्यधिक शक्ति, विमल मस्तिष्क, विशाल संकल्प-शक्ति, सुस्पष्ट समझ, तीव्र स्मरण-शक्ति तथा सद्विचार-शक्ति से सम्पन्न होता है। स्वामी दयानन्द ने एक महाराजा के वाहन को रोक दिया था। उन्होंने अपने हाथों से एक खड्ग को तोड़ डाला। यह उनकी ब्रह्मचर्य-शक्ति के कारण ही हुआ। सभी आध्यात्मिक आचार्य सच्चे ब्रह्मचारी थे। यीशु, शंकर, ज्ञानदेव तथा समर्थ रामदासह्नहये सभी ब्रह्मचारी थे।

मेरे प्रिय मित्रो! क्या अब आपने ब्रह्मचर्य के महत्त्व को पूर्ण रूप से समझ लिया है? प्रिय भाइयो! क्या अब आपने ब्रह्मचर्य के वास्तविक अर्थ तथा उसकी महिमा को स्वीकार कर लिया है? यदि विविध साधनों से तथा बड़ी कठिनाई झेलने और प्रचुर मूल्य चुकता करने के पश्चात् प्राप्त की जाने वाली शक्ति प्रतिदिन यों ही नष्ट की जाये, तो आप कैसे हृष्ट-पुष्ट तथा स्वस्थ रहने की आशा कर सकते हैं! यदि पुरुष तथा महिलाएँ, बालक तथा बालिकाएँ ब्रह्मचर्य-व्रत का यथा-सम्भव पालन नहीं करते, तो उनका हृष्ट-पुष्ट तथा स्वस्थ रहना असम्भव है।

विद्युत्-अणुओं में भी कुँवारे विद्युत्-अणु तथा विवाहित विद्युत्-अणु होते हैं। विवाहित विद्युत्-अणु जोड़ों में प्रकट होते हैं। कुँवारे विद्युत्-अणु अकेले रहते हैं। ये कुँवारे विद्युत्-अणु ही चुम्बकीय शक्ति उत्पन्न करते हैं। ब्रह्मचर्य की शक्ति विद्युत्-अणुओं में भी दृष्टिगोचर होती है। मित्रो! क्या आप इन विद्युत्-अणुओं से कुछ पाठ सीखेंगे? क्या आप ब्रह्मचर्य का अभ्यास करेंगे तथा बल और आध्यात्मिक शक्ति का विकास करेंगे? प्रकृति आपकी सर्वोत्तम गुरु तथा आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शिका है।

ब्रह्मचर्य के द्वारा ऐहिक जीवन की विपत्तियों को पराभूत करें तथा स्वास्थ्य, शक्ति, मानसिक शान्ति, तितिक्षा, शौर्य, भौतिक उन्नति, मानसिक विकास और अमरता प्राप्त करें। जिस व्यक्ति का काम-शक्ति पर पूर्ण नियन्त्रण है, वह उन शक्तियों को प्राप्त कर लेता है जो अन्य साधनों से अप्राप्य हैं। अतः अपनी शक्ति का अपव्यय विषय-सुखों में न करें। अपनी शक्ति को सुरक्षित रखें। सत्कर्म करें तथा ध्यानाभ्यास करें। इससे आप शीघ्र ही अतिमानव बन जायेंगे। आप भगवान् के साथ वार्तालाप करेंगे तथा दिव्यता प्राप्त करेंगे।

(अनूदित)

हमारा अभीष्ट लक्ष्य

ऋग्वेद का पुरुषसूक्त परमात्मा को सहस्रों अंगों से युक्तह्वसहस्र शिर, चक्षु, पैर आदि से युक्त बतलाता है। जो-कुछ था, जो-कुछ होगा, वह सब इस पुरुष में ही सन्निहित है। इस विशाल दृष्टि के पीछे यही दृष्टिकोण है कि यह जगत् एक शरीर है और जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग एवं अवयव हमारे व्यक्ति-चैतन्य में एकीभूत हैं, उसी तरह जगत् के विभिन्न अंगह्वहमारे शरीरों के सहितह्वउस सर्वशक्तिमान् में परिशुद्ध तत्त्व के रूप में एकीभूत हैं। उसे हम ईश्वर, परम तत्त्व आदि कहते हैं। इस सत्य के सम्यक् अवबोध से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस जगत् में हमारा दूसरों के साथ सम्बन्ध क्या है तथा जीवन में हमारा परम कर्तव्य क्या है? इससे बढ़ कर उन्नत कर्तव्य अथवा उत्तरदायित्व क्या हो सकता है कि हम यह समझें कि इस परमात्मा में ही अपनी सत्ता को परिसमाप्त करना ही सत्ता की पूर्णता है। यही हमारा अभीष्ट लक्ष्य है।

स्वामी कृष्णानन्द

अनन्य प्रेम

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

कल एक बड़ी आयु की महिला मेरे पास आयीं और कहने लगींह्न ह्न''चालीस वर्ष पहले गुरुदेव ने मुझे वचन दिया था कि नि:सन्देह रूप से मुझे अवश्य ही आत्मज्ञान प्राप्त हो जायेगा। चालीस वर्षों से मैं इसमें लगी हुई हूँ, फिर भी मुझे अभी तक प्राप्त क्यों नहीं हुआ?''

इसी सन्दर्भ में मैं आपसे इस महत्त्वपूर्ण तत्त्व, इस सक्षम आन्तरिक अवस्था अथवा इस अत्यावश्यक स्थिति के विषय में बात करूँगा, जिसे 'अनन्य प्रेम' कहा गया है। उस महिला को मैंने उत्तर दियाह्न ह्न''हाँ, यह सत्य है कि आप पिछले चालीस वर्षों से इसे पाने के लिए प्रयत्नशील हैं; किन्तु इसके साथ ही और भी बहुत-कुछ है, जिसे पाने का आप प्रयत्न करती रही हैं। यदि आप केवल आत्मज्ञान-प्राप्ति में ही लगी हुई होतीं, तो आपकी वह ही एकमात्र इच्छा, एकमात्र कामना, आपके व्यक्तित्व की एकमात्र लालसा, आपके सम्पूर्ण जीवन का एकमात्र लक्ष्य केवल वह ही रहा होता और आपने उसे प्राप्त करने के लिए अपना समस्त प्रेम उसी ओर मोड़ दिया होताह्न ह्नतो कौन जाने, इस समय आप मुझसे यह प्रश्न न पूछ रही होतीं।''

फिर मैंने पूछाह्न ह्न''क्या श्रद्धेय गुरुदेव ने यह भी कहा था कि आप यह कब प्राप्त करेंगी?'' उसने कहाह्न ह्न''नहीं।'' मैंने कहाह्न ह्न''भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है : **'बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते'** अर्थात् अनेक जन्मों के पश्चात् ज्ञानी मुझे प्राप्त करते हैं। जब आपके काम-धन्धे और कार्यकलाप अनेकों होते हैं, तो आपको समय आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। आपकी प्रिय वस्तुओं में आत्मज्ञान एक रहा होगा; किन्तु इसके साथ-साथ आपके बच्चे, आपके पति, आपका घर, आपकी सम्पदा, आपका सामाजिक जीवन और आपका निजी जीवन भी था, जिसमें और भी अनेक आवश्यक वस्तुएँ आपके लिए रहीं।''

अत: आध्यात्मिक जीवन की उन्नति और इसका विकास एक ऐसी क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें आपने अपनी अभिरुचियों और क्रियाकलापों को उत्तरोत्तर कम करते जाना तथा अपने द्वारा चुने हुए परम लक्ष्य की ओर विकसनशील केन्द्रीकरण करते जाना होता है। हमें अपने जीवन का सावधानी से परीक्षण करना होगा और देखना होगा कि क्या इस प्रकार की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी है (अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं, गतिविधियों और कार्य-व्यापारों के क्षेत्र को धीरे-धीरे कम करते जाने की प्रक्रिया)।

आरम्भ में यह अनेक होते हैं, विविध प्रकार के होते हैं और इनका क्षेत्र भी विस्तृत होता है। जैसे-जैसे साधना अर्थात् आध्यात्मिक जीवन आगे बढ़ता जाता है, यह अल्प से अल्पतर होने लगते हैं। किन्तु इतना हो जाना भी पर्याप्त नहीं है। अन्तिम लक्ष्य, चरम अभीष्ट है उस अवस्था तक पहुँच जाना जहाँ समस्त कामनाओं

का एकमेव लक्ष्य, एकमात्र परम लक्ष्य के साथ परिपूर्ण एकत्व हो जाता है। जब ऐसा हो जाता है, तब यह एक नवीन दिवस के प्रारम्भ हो जाने की पूर्व-सूचना है।

हमारे सभी सन्त-मनीषियों ने यही उपदेश हमारे सामने रखे हैं। गीता में इसे 'अनन्य भक्ति' (जिसमें अन्य कोई या कुछ न हो) कहा गया है। जब यीशु से पूछा गयाह्लह्ल''सब उपदेशों में सबसे महान् कौन-सा है?'' उन्होंने उत्तर दियाह्लह्ल''हम सबका परमात्मा एक है और आप उसे अपने सम्पूर्ण हृदय से, अपनी सम्पूर्ण आत्मा से, सम्पूर्ण मन और पूर्ण क्षमता से प्रेम करें।'' और श्री कृष्ण भगवान् ने कहाह्लह्ल''**तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत**'' अर्थात् हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमात्मा की ही शरण में जा।

इस प्रकार हमारे धर्मग्रन्थ विभिन्न ढंगों से इस अविभक्त प्रेम, अर्थात् अनन्य भक्ति की ओर संकेत करते हैं। क्योंकि ऐसा कहते हैं कि जहाँ आपका प्रेम होता है, वहीं आपका मन रहता है, और जहाँ आपका मन होता है, उसी ओर आप बिना रुके बढ़ते हैं। यही नियम है। जहाँ आपका मन और चिन्तन रहता है, वही दिशा आपका जीवन अपनाता है।

और मन को सब ओर व्याकुलतापूर्वक भटकते रहने से रोकने के लिए अनन्य प्रेम आवश्यक है। सामान्य लौकिक जीवन में भी जब आपको कुछ अच्छा लगता है, जब आपका हृदय किसी वस्तु की ओर आकर्षित हो जाता है, तब आप सहज ही उस ओर खिंच जाते हैं और उसी में लीन हो जाते हैं, तब समय का भी पता नहीं चलता। जहाँ ऐसा आकर्षण, ऐसा प्रेम है, वहाँ सब-कुछ सहजता से, स्वाभाविक रूप में ही, बिना किसी प्रयत्न या संघर्ष के ही हो जाता है।

क्या ऐसा आकर्षण ब्रह्मज्ञान के लिए आपके मन में है? साधना में, नाम-स्मरण में, मोक्ष-प्राप्ति में क्या आपकी ऐसी रुचि है? ऐसी तीव्र इच्छा, ऐसी ही लालसा है? यदि है, तो यह प्राप्त हो जाता है। किन्तु हम विविध इच्छाओं और विविध रुचियों वाले जीव हैं। बहुत कुछ हमें आकर्षक लगता है, 'बहुत ही अधिक' भी कह सकते हैं। हममें प्रेम की अनन्यता नहीं है।

एक पद्य है, जिसमें एक पंक्ति हैह्लह्ल''**कण्ठ-अवरोधन-विधौ स्मरणं कुतस्ते।**'' कवि पूछता हैह्लह्ल''यदि तुम आजीवन विषय-पदार्थों का वस्तुओं के रूप में ही चिन्तन करते रहे हो, तो कैसे यह आशा रख सकते हो कि जीवन के अन्तिम क्षण में अचानक बड़े भक्त बन जाओगे और भगवद्-चिन्तन करते हुए, नाम-स्मरण करने लग जाओगे?'' वह कहता हैह्लह्ल ''असम्भव! अत: सतत भगवन्नाम-स्मरण का अभ्यास अभी से आरम्भ कर दो।''

इसी प्रकार हमें अपने हृदय में अनन्य प्रेम उत्पन्न करके उसे पोषित करते रहना चाहिए। ऐसा प्रेम विकसित करना चाहिएह्लह्ल''मैं यह प्रभु के लिए कर रहा हूँ; उनके प्रेम के लिए कर रहा हूँ। जो-कुछ भी मैं करता (या करती) हूँह्लह्लबैठना, उठना, लेटना, खाना, काम करना, बोलना या चलना-फिरनाह्लह्लसब-कुछ उन्हीं प्रभु के लिए कर रहा हूँ, जो मेरे अन्तस्थल में निवास कर रहे हैं, निरन्तर मेरे साथ हैं, अपने जीवन का प्रत्येक पल मैं उन्हीं के सान्निध्य में जी रहा हूँ।

''मेरा चलना-फिरना और जीना उन्हीं में है। इसलिए मेरे जीवन का सब-कुछ उन्हीं के प्रेम के लिए, केवल उनके लिए ही होगा। **कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृते: स्वभावात्।**

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि।। (अर्थात् हे प्रभु, मैं अपनी देह, वाणी, मन, इन्द्रियों, बुद्धि और आत्मा से, अथवा प्रकृति के स्वभाववश हो कर जो-कुछ भी करूँ, वह सभी कुछ, हे सर्वव्यापक प्रभु आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।)''

इसलिए सब-कुछ अत्यन्त प्रेमपूर्वक भगवान् को अर्पण करेंह्वह्वसब-कुछ, मन, वाणी, शरीर से, पलक झपकना, श्वास-प्रश्वास, सोना, जागना, आपके जीवन को बनाने वाला सब-कुछ उनके अर्पण करते रहें। कुछ भी शेष न रखें; क्योंकि आप उनकी विद्यमानता में प्रतिपल हैं।

जो-कुछ भी आप कर रहे हैं, यदि वह सब-कुछ उन्हें समर्पित करते हैं, तो आप इसे किसी भेद-भावना से, बिना प्रेम के समर्पित नहीं कर सकते, तब तो यह शुष्क हो जायेगा। उन्हें अर्पण करने योग्य नहीं रहेगा। छोटी-से-छोटी वस्तु-पदार्थ या कार्य भी प्रेम और भक्ति-भाव सहित अर्पण करना चाहिए। अत्यधिक गहन भक्ति-भाव और श्रद्धा व प्रेमपूर्वक समर्पित करें।

अत: आप ऐसे बन जायें। प्रेम का केन्द्र बन जायें। प्रेम का सतत प्रवाहित होने वाला स्रोत बन जायें। जो-कुछ भी आप करें, उसमें अपना यह प्रेम अभिव्यक्त होने दें, उसी प्रेम का एक हिस्सा बना लें। तब यह भगवान् के स्वीकार करने योग्य हो जायेगा। विदुर-पत्नी ने भगवान् को अत्यधिक प्रेम सहित केलों की जगह उनके छिलके ही खिला दिये थे। अत्यधिक प्रेम और आनन्द के अतिरेक में सुध-बुध भूल कर उससे ऐसी भूल हो गयी; किन्तु उस भूल में इतनी श्रद्धा और भक्ति ओत-प्रोत थी कि भगवान् श्री कृष्ण विदुर-पत्नी के प्रेम-रस-पगे छिलके ही खाते चले गये। एक के ही नहींह्वह्वदूसरे, तीसरे और चौथे केले के छिलके भी खा गये। वह तो केले के छिलके नहीं, उसके विशुद्ध प्रेम-रस का पान कर रहे थे।

जो-कुछ भी आप करते हैंह्वह्वछोटे-से-छोटा काम भी प्रतिदिन करते समय यदि आप हर समय, हर जगह भगवान् की उपस्थिति को अपने एकदम निकट अनुभव करते हुए करते हैंह्वह्वतो प्रेम में जीना, प्रेम में काम करना, प्रेम में बोलना, छोटे-से-छोटा प्रत्येक कार्य प्रभु-प्रेम में करना सम्भव हो जायेगा।

तब यह अनन्य भक्ति में परिणित हो जायेगा। आप अनन्य प्रेम की साकार प्रतिमा बन जायेंगे। आप साक्षात् प्रेम ही बन जायेंगे। और इस प्रकार परम आनन्द के प्रवेश-द्वार खुल जायेंगे। तब आपको भगवान् के पास जाना नहीं पड़ेगा, प्रत्युत भगवान् स्वयं आपके पास आयेंगे।

वे तो पहले ही हमारे भीतर-बाहर विद्यमान हैं ही। ''मैं तुम सबके हृदय में निवास करता हूँ। मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे पास हूँ।'' अर्जुन को अपने ज्ञानोपदेशों के द्वारा भगवान् अनेक ढंग से बारम्बार यह सत्य बताने का प्रयत्न करते रहे हैं।

अत: जो-कुछ भी आप करते हैं, अविभक्त प्रेम के साथ, अनन्य भक्ति के साथ करें। तब चाबी आपके पास है। आपके पास अनन्य प्रेम के रहस्यह्वह्वजो कि भगवान् का अभी और यहीं होना-पन हैह्वह्वको उद्घाटित करने की चाबी है। वह प्रेम भगवान् के रूप में अभी और यहींह्वह्वजहाँ हम बैठे हैंह्वह्वहै। उनकी कृपा आप सब पर हो!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

वेद १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

वेद और उनका वर्गीकरण

भारतीय दर्शन और धर्म के इतिहासकारों के लिए ऋग्वेद से अध्ययन प्रारम्भ करना एक रूढ़ परम्परा हो गयी है। ऋग्वेद प्राचीन भारतीय संस्कृति का सर्वप्रथम धर्मग्रन्थ माना जाता है; अतः वेदों का अध्ययन भारतीय दर्शन और धर्म वाङ्मय की उत्कृष्ट शिक्षा का प्रथम चरण माना जाता है।

ऋग्वेद छान्दस मन्त्रों का ग्रन्थ है और मण्डल नामक दश भागों में विभक्त है। उसका एक अन्य विभाजन आठ अनुभागों में हुआ है, जिसे 'अष्टक' कहा जाता है। ऋग्वेद की ऋचाएँ मन्त्र कहलाती हैं। ये शक्ति-संवलित पद्य हैं जिनमें विलक्षण लय, धारा-प्रवाह एवं उदात्त प्रभावोत्पादकता है। आत्मिक प्रेरणा से अनुप्राणित ये मन्त्र चार चरणों में निबद्ध छन्द हैं। यह काव्य ऐसा विशिष्ट अर्थ-गर्भित एवं शक्ति-सम्पन्न है कि शुद्ध और विधिवत् उच्चारण द्वारा उसकी शक्ति किसी भी लौकिक अथवा पारलौकिक लक्ष्य के अनुकूल अथवा प्रतिकूल निर्देशित की जा सकती है।

मन्त्रों में मन्त्रों का मनन करने वाले का त्राण करने की क्षमता है। यही कारण है कि मन्त्र को '**मननात् त्रायते**' कहा जाता है। वेद-मन्त्रों का उद्देश्य, जिन इष्ट देवों को वे सम्बोधित किये गये है, उनका आह्वान करना एवं किसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु उन देवों की शक्ति की आहूत करना है। ये मन्त्र दिव्य लोकों के निवासियों और उन देवताओं में, जो अस्तित्व की विविध भूमियों के विभिन्न कार्यों में अन्तर्भूत हो कर उनकी देख-भाल करते हैं तथा कार्यों को सम्पन्न करते हैं, सम्बन्ध-स्थापन के साधन हैं। ऐसे भी मन्त्र है जो विराट् अथवा ब्रह्म ही महिमा के सम्बन्ध में कहे गये हैं।

वेद ऋक्, यजु, साम और अथर्व नामक चार समूहों में बाँटे गये हैं। ऋग्वेद प्रमुखतः स्वर्ग के देवताओं की स्तुति-स्वस्ति से सम्बन्धित दिव्य मन्त्रों का प्रमुख ग्रन्थ है। यजुर्वेद का विभाजन कृष्ण और शुक्ल दो शुद्ध पाठान्तरों में किया गया है। यजुर्वेद के गद्य और पद्य में प्रधानतः यज्ञ के सूत्र हैं जो यज्ञ के समय गा कर पढ़े जाते हैं। सामवेद के अधिकांश पद्य ऋग्वेद से लिये गये हैं। उन्हें यज्ञ के समय गाने के लिए संगीत-बद्ध किया गया है। अथर्ववेद तन्त्र-मन्त्र और अभिचार के पद्यों से पूर्ण है और आध्यात्मिक उद्देश्य की अपेक्षा उसके विभिन्न निम्नतर प्रयोजन हैं।

प्रत्येक वेद के चार भाग हैं जिन्हें 'संहिता', 'ब्राह्मण', 'आरण्यक' तथा 'उपनिषद्' कहा जाता है। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, वेदों के 'संहिता'-भाग में देवताओं को सम्बोधित स्तुति के मन्त्र हैं। 'ब्राह्मण' वेदों का कर्मकाण्ड-भाग है, जिसमें यज्ञ की विधियों की सविस्तार मीमांसा की गयी है। इन यज्ञों में सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा व्यय-साध्य राजसूय, अश्वमेघ, अग्निष्टोम और सोमयाग हैं जो लौकिक प्रभुत्व अथवा अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए

किये जाते हैं। बहुत से गौण यज्ञ भी हैं, जिनके अनुष्ठान की विधि का निर्देश ब्राह्मणों में दिया हुआ है। संहिताओं के मन्त्रों का उच्चारण मुख्यतः यज्ञ के अवसरों पर होता है; परन्तु विशुद्ध आध्यात्मिक क्रियाओं के रूप में ये प्रार्थना और ध्यान में भी प्रयुक्त हो सकते हैं। उपनिषदों के दार्शनिक रहस्यवाद की विकास-परम्परा में इस पक्ष पर अधिक बल दिया गया है, जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे।

वेद की विषय-वस्तु

जैसा ऊपर कहा जा चुका है, वेद-मन्त्र उन देवों की स्तुति हैं जो मानव को हर प्रकार का आशीर्वाद देने की क्षमता से पूर्ण माने गये हैं; परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि संहिताओं के कवियों को परम सत्ता के अस्तित्व का ज्ञान नहीं था या जैसी पश्चिम के अनेक भाषा-वेत्ताओं के सोचने की प्रवृत्ति है कि वेदों के देवता प्रकृति-प्रक्रिया के मात्र बचकाने मूर्त आदर्श हैं। कतिपय इतिहासकारों का यह अभिमत कि 'वेद-मन्त्र अपरिपक्व मस्तिष्क वाले चरवाहों (आभीरों) की मूर्खतापूर्ण बकवास अथवा आदिम काल के मानव-मन के ग्राम्य गीत हैं', नितान्त त्रुटिपूर्ण है। ऐतिहासिक मूल्यांकन को, चाहे विचारों का हो अथवा समाज का, प्रक्रिया के तार्किक आधार विस्मृत नहीं करने चाहिए। अनेक रूपों और आकारों को एक (परम सत्) की अभिव्यक्तियों के रूप में तथा एक को अनेक में प्रकटित देखने की प्रवृत्ति का ऋग्वेद के मन्त्रों में स्पष्टतः पता लगाया जा सकता है। यह सत्य है कि वेदों के मुख्य देवता इन्द्र, वरुण, अग्नि, सूर्य (आदित्य, सवित्र), सोम, यम, वायु, अश्विनीकुमार द्वय, बृहस्पति और ब्रह्मणस्पति हैं तथा दैवी शक्तियों का आह्वान करने के लिए मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण से अलौकिक परिणाम प्रस्तुत हो सकते हैं, यहाँ तक कि वे बिलकुल साकार हो सकती हैं; परन्तु ऋग्वेद में सार्वभौमिक दिव्य सत्ताओं और विश्व के परम देवों के रूप में विष्णु, रुद्र, प्रजापति अर्थात् हिरण्यगर्भ सम्बन्धी धारणाओं के बीज-स्रोत भी सुगमता से ढूँढे जा सकते हैं। परम सत् की अन्य भव्य संकल्पना पर, जिसका निरूपण 'पुरुषसूक्त' तथा 'नासदीयसूक्त' में हुआ है, पृथक् रूप से विचार करना होगा।

(अनूदित)

दिव्योपदेश

जब विवेक का सूर्योदय होता है, तब कुहरा मिट जाता है, फिर ईश्वर का स्वरूप प्रत्यक्ष होता है।

जहाँ प्रेम है, वहाँ शान्ति और सौमनस्य हैं।

कामना का दूसरा नाम है दरिद्रता, अपूर्णताह्नहृयही नहीं, मृत्यु भी।

ईश्वर के प्रति एकांगी प्रेम में अत्यधिक भावनाओं का पुट दीजिए।

परिवर्तनशील संसार जिस परिवर्तनविहीन तत्त्व से परिचालित है, उसे परमात्मा कहते हैं।

पूर्णत्व की दिशा में प्रशस्त पथ का नाम हैह्नहृधर्म। **स्वामी शिवानन्द**

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति के पाठ १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

समय सबसे अधिक मूल्यवान् है

समय धन है। समय धन से भी अधिक मूल्यवान् है। धन खो जाये तो फिर पैदा किया जा सकता है, लेकिन समय खो गया तो फिर प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो क्षण बीत गया, उसे वापस नहीं लाया जा सकता।

जीवन क्षणों के समूह के सिवा और कुछ नहीं है। गीता-पाठ, कीर्तन, जप, प्रार्थना, ध्यान, गरीबों और साधुओं की सेवा, पाठ्य-पुस्तकों की पढ़ाई, अच्छे साधनों से धनोपार्जन आदि में जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। घड़ी टिक्-टिक् करके यह याद दिलाती है कि जीवन का एक-एक क्षण बीता जा रहा है।

ताश या शतंरज खेलने में, सिनेमा देखने में और उपन्यास पढ़ने में समय बरबाद न करो। समय का मूल्य जानो। उसका दुरुपयोग करोगे, तो बुढ़ापे में पछताओगे। व्यर्थ की गपशप में समय बरबाद न करो। अपने समय का ठीक-ठीक उपयोग करोगे, तो तुम महान् बनोगे। रोज का कार्यक्रम बना लो और उस पर डटे रहो। निश्चय ही तुम सफल होओगे।

समयनिष्ठ बनो

समय बहुमूल्य है। रोज एक घण्टा देर से स्कूल जाओगे, तो पाठ पढ़ने से चूक जाओगे, ठीक समय पर स्टेशन नहीं जाओगे तो गाड़ी न पकड़ सकोगे।

ठीक समय पर काम करने की आदत डालो। जल्दी उठो और ठीक समय पर अपना काम शुरू कर दो। १० बजे स्कूल जाना हो, तो उससे कुछ समय पहले ही वहाँ पहुँच जाने का प्रयत्न करो। सभाओं में जाना हो, तो भी समय का ध्यान रखो।

देखो, प्रकृति भी नियमित चलती है। सूर्य ठीक समय पर निकलता है। ऋतुएँ ठीक समय पर आती हैं। समय का पालन नहीं करोगे, तो जीवन में असफल रहोगे। समय का पालन करोगे, तो महान् सफलता पाओगे। नियमितता की आदत डालोगे, तो सभी काम ठीक समय पर करने में सदा सहायता मिलेगी।

अपना कर्तव्य भली प्रकार पूरा करो

प्रत्येक मनुष्य को कर्तव्य का पालन करना होता है। माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। तुम्हारी प्यारी माँ तुम्हें रोज खिलाती है और सब प्रकार से तुम्हें आराम पहुँचाती है। उससे प्रेम करो। उसका आदर करो। वह जो कहे, उसे पूरा मन लगा कर करो तथा उसे प्रसन्न रखो। पिता का भी कहना मानो। अपने पूज्य पिता का भी आदर करो। वह तुम्हारे लिए धन कमाते हैं। माता-पिता दोनों तुम्हारा ख्याल रखते हैं। तुम्हारे लिए वे भगवान् हैं, जिनका दर्शन तुम स्वयं कर सकते हो।

अपना पाठ अच्छी तरह याद करो। अपने शिक्षकों की आज्ञा का पालन करो और उनका आदर

करो। यह भी तुम्हारा कर्तव्य है। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपनी मातृभूमि की सेवा करो। गरीबों का दु:ख दूर करो। यह भी तुम्हारा कर्तव्य है।

बड़ों का आदर करो। पड़ोसियों की सेवा करो। प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना और सन्ध्या करो। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तुम अपने कर्तव्यों का पालन जितनी कुशलता से करोगे, उतना ही तुम्हारा जीवन सफल होगा।

वीर बनो

दब्बू न बनो। साहसी बनो। खुश रहो। शूर बनो। शेर की तरह चलो। हिम्मत के साथ बोलो। झेंप मिटाओ। सदा खुश रहो। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखो। स्वस्थ, सुदृढ़ और जोशीले रहो।

जो भी काम करने का निश्चय करो, उसे पूरे मन से, जी लगा कर पूरा करो। हर हालत में उसे पूरा करो। अधूरा न छोड़ो। पढ़ने के लिए कोई पुस्तक लो, तो उसे पूरी पढ़ो।

सेवा और त्याग तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाले महापुरुषों का स्मरण रखो। ऐसे वीरोचित कार्य करो जिन्हें लोग चिर काल तक याद रखें। आदर्श जीवन जियो।

सूक्तियाँ

जहाँ अज्ञान ही आनन्द है, वहाँ बुद्धिमान् बनना नादानी है।

हथेली पर दही नहीं जमता।

बूँद-बूँद से भरे सरोवर।

छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखो, बड़ी बातें अपने-आप ही सुलझ जायेंगी।

धीमा किन्तु निरन्तर अध्यवसाय करने वाला सफल होता है।

देख कर पाँव रखो।

जल्दबाजी से बरबादी होती है।

शील स्वयं अपना पुरस्कार है।

क्रीड़ा-रहित कार्य मूढ़ता का जनक है।

सब बातों की जानकारी रखो; पर किसी एक में प्रवीण बनो।

जो-कुछ भी करो, कुशलतापूर्वक करो।

मेरे मन कुछ और है और कर्ता के कुछ और।

फूलमाला से मीठी बोली बेहतर है।

अपने लिए जैसा बरताव पसन्द करते हो, वैसा ही दूसरों के साथ करो।

मृदु वचन से कटुता दूर हो जाती है।

कोई अवसर न चूको।

बहती गंगा में हाथ धो लो।

एकता में बल है।

ईमानदारी का काम सम्माननीय होता है।

भाग्य पुरुषार्थी का ही साथ देता है।

पराजय विजय की सीढ़ी है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

साधु की दृष्टि में आध्यात्मिक अग्नि होती है। यह आपके पापों को भस्मीभूत कर देती है।　　स्वामी शिवानन्द

योग द्वारा स्वास्थ्य :

सुखपूर्वक प्राणायाम

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

विधि

बैठने के किसी आसन में बैठें। मेरुदण्ड, ग्रीवा और सिर सीधा रखें। मध्यमा एवं तर्जनी उँगलियाँ मुड़ी

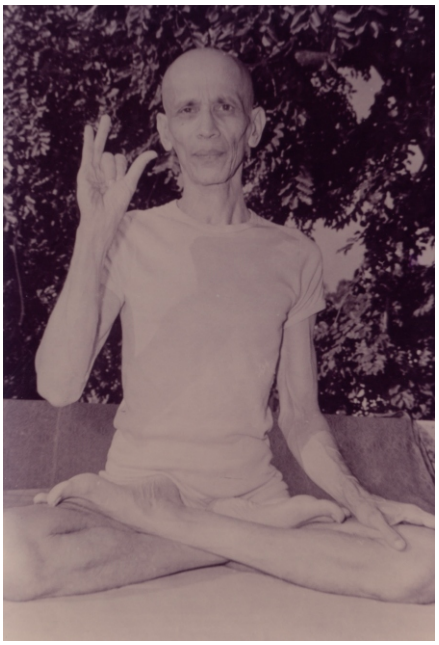

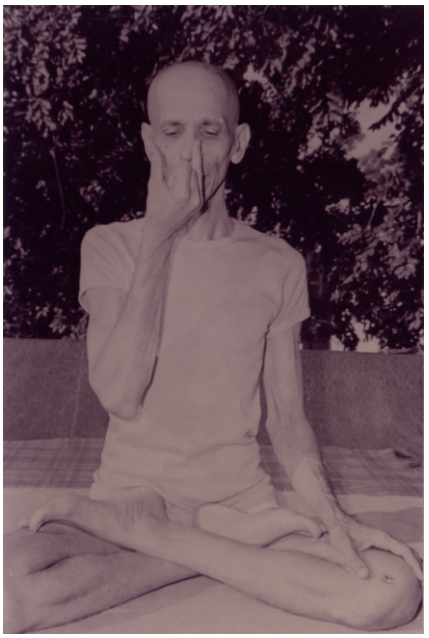

हुई तथा अन्य तीनों उँगलियाँ खुली रखें। दाहिने अँगूठे से दाहिना नासा-पुट बन्द करें। बिना कोई ध्वनि किये बायें नासा-पुट से बहुत ही धीरे-धीरे पूरक करें। तब दाहिने हाथ की कनिष्ठिका एवं अनामिका उँगलियों से बायाँ नासारन्ध्र बन्द करें। तब दाहिने अँगूठे को ढीला कर दाहिने नासा-पुट से अति-धीमी गति से रेचक करें। अब अर्ध-प्रक्रिया पूरी हुई। दाहिने नासा-पुट से धीरे-धीरे और सुव्यवस्थित रूप से वायु भीतर लें और बायें नासा-पुट से धीरे-धीरे श्वास निकालें। यह एक आवर्तन पूरा हुआ।

पूरक और रेचक का अनुपात १:२ होना चाहिए। प्रथम १५ दिनों में ५ सेकण्ड तक श्वास लें और १० सेकण्ड तक श्वास निकालें। अगले (द्वितीय) पक्ष में १० सेकण्ड श्वास लेने की और २० सेकण्ड श्वास छोड़ने की समयावधि बढ़ायें । पूरक और रेचक करते समय फुप्फुसों का क्रमशः प्रसारण और संकोचन करें।

तीन मास के नियमित और सतत अभ्यास के पश्चात् आप श्वासरोक (कुम्भक) भी प्रारम्भ कर सकते हैं। श्वास लेने, रोकने और छोड़ने के समय का

अनुपात १:२:२ होना चाहिए अर्थात् यदि आप ५ सेकण्ड तक श्वास लें, पूरक करें, तो कुम्भक और

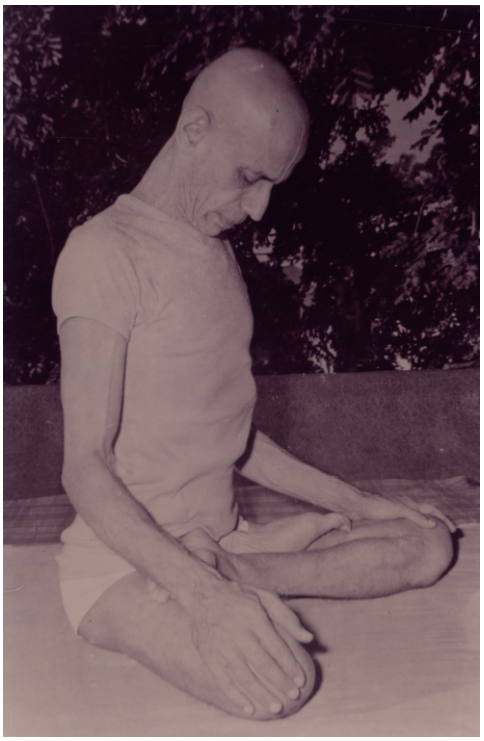

रेचक प्रत्येक १० सेकण्ड तक का होना चाहिए। जैसे-जैसे आप अभ्यास में प्रगति करें, आप १:४:२ का अनुपात कर सकते हैं। कुम्भक के समय आप जालन्धर-बन्ध कर सकते हैं। इसकी विधि निम्नांकित है :

श्वास भीतर लेने के पश्चात् जब श्वास रोके हुए हों, ग्रीवा धीरे से झुकायें और जत्रुक (हँसली) पर ठुड्डी को टिका दें। यह बन्ध वायु के सिर की ओर ऊपर जाने के दबाव को रोकता है।

रेचक से पूर्व सिर धीरे-धीरे उठायें, उसे सीधा करके रखें, तब रेचक करें। यह जालन्धर-बन्ध का मोचन है।

चेतावनी : यदि आप सिरदर्द, सिर का भारीपन, चक्कर आना, बेचैनी आदि का अनुभव करते हैं, तो इसका आशय है कि आप अधिक परिश्रम एवं फुप्फुसों पर अधिक दबाव डाल रहे हैं। अतएव आपको कुम्भक की समयावधि घटा देनी चाहिए। प्राणायाम के सही अभ्यास का प्रथम लक्षण हैह्लहताजगी, शक्ति एवं शरीर तथा मन का हलकापन अनुभव होना। यदि आप इसका नकारात्मक परिणाम अनुभव करें, तो कुम्भक के अभ्यास को तुरन्त बन्द कर दें और किसी कुशल व्यक्ति से परामर्श लें।

लाभ

यह प्राणायाम समस्त व्याधियों का हरण करता, नाड़ियों को शुद्ध करता, ध्यान के लिए मन को स्थिर करता, जठराग्नि और क्षुधा को उद्दीप्त करता तथा ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक होता है।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

अपने हृदय-मंच से कामादि विकारों को बाहर खदेड़ दीजिए। इन्होंने बलात् वहाँ अपना राज्य कायम कर लिया है। प्रेम, चित्तशुद्धि और शान्ति-रूपी सद्विचारों को वहाँ समासीन कीजिए जो वास्तव में राज्याधिकारी हैं।

स्वामी शिवानन्द

बाल-स्तम्भ :

तब तुम बन जाओगे इन्सान

स्वामी रामराज्यम्

थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका मैडम ब्लावत्स्की के जीवन की यह घटना उनके उस गुण को दर्शाती है, जो दो हाथ-पैरों वाले मानव-प्राणी को इन्सान बना देता है।

एक बार पानी के जहाज से न्यूयार्क जाने के लिए वह होवर के बन्दरगाह पर खड़ी थीं। तभी उनकी निगाह एक महिला पर पड़ी, जो अपने दो बच्चों के साथ खड़ी रो रही थी। वह दौड़ कर उस महिला के पास पहुँचीं और प्यार से उसके सिर पर हाथ रख कर बोलींह्लह्ल''क्या हुआ तुम्हें? मुझे बताओ।'' उस महिला ने कहा कि वह न्यूयार्क जाने के लिए उस बन्दरगाह पर आयी थी। वहाँ उसे एक ठग मिल गया जिसने अपने को उस बन्दरगाह का अधिकारी बता कर उससे टिकट के पैसे ले लिये और उसे नकली टिकट थमा कर गायब हो गया। उसके पास दूसरे टिकट खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। अब वह क्या करे?

''यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है,'' मैडम ने कहाह्लह्ल''तुम थोड़ी देर तक यहीं रुको। मैं अभी आयी।''

जहाज छूटने वाला था। वह भागती हुई जहाज के एजेंट के पास पहुँचीं। वह अपना प्रथम श्रेणी का टिकट वापस करके बदले में अपने, उस महिला और उसके दो बच्चों के लिए साधारण श्रेणी के चार टिकट खरीद लायीं। फिर उन्होंने उन सबके साथ साधारण श्रेणी में बैठ कर यात्रा की।

मैडम का कौन-सा गुण दर्शाती है यह घटना? बिना किसी के कहे कष्ट उठाने के लिए तैयार रहते हुए दूसरों का दुःख दूर करने की तत्परता का गुण। यह गुण तभी आता है, जब दुःखियों की छाती पर रखे हुए दुःख के पत्थर का बोझ हम अपनी छाती पर महसूस करने लगते हैं।

बच्चो, अपने में इस गुण को विकसित करने का प्रयास करते रहना, दुःखियों के आँसू पोंछते रहना, उनके सिर पर प्यार से हाथ रख कर उन्हें सान्त्वना देते रहना। तब तुम मात्र मानव-आकार वाले प्राणी न रहोगेह्लह्लतब तुम बन जाओगे इन्सान। □ □ □

दिन में कम-से-कम ३० मिनट तक अपने को ईश्वर के लिए पूर्णतः दे डालें। अपने समस्त विचारों, भावनाओं और कामनाओं को ईश्वरोन्मुख बना दें।...सामान्यतः हम शत-प्रति-शत किसी विचार के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते। यही हमारी असफलता का कारण है। हम विघटित रहते हैं। हमारी भावनाएँ कुछ माँग करती हैं। हमारा मन कुछ और चाहता है। उन दोनों को एक ही माँग करनी चाहिएह्लह्लईश्वर-साक्षात्कार की माँग। **स्वामी कृष्णानन्द**

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपनी विनम्र सेवा 'शिवानन्द होम', जो कि लक्ष्मणझूला के समीप तपोवन में स्थित है, के द्वारा निरन्तर कर रहा है। यह असहाय, निराधार रोगियों के लिए चिकित्सीय सुविधाओं से पूर्ण एक घर है।

यह उनके लिए है, जो न तो केवल निराश्रय हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त जो घर की माया-ममता की उष्मा के लिए उत्कण्ठित हैं, अपने परम प्रिय परिवार-जनों के पास जाने के लिए परम साध रख रहे हैं, परन्तु उन्हें ऐसे कोई स्वजन नहीं हैं जिन्हें वे अपना कह सकें। बहिष्कृत और परित्यक्त, विस्मृत और त्यजित, उत्पीड़ित और उपहास-पात्र, व्यंग-भाजन और अवमानितह्नह्नकोई बड़ी कठिनाई से भी कल्पना या अनुमान न कर सकेगा कि इस प्रकार के लोग ऐसी परिस्थितियों में कितनी निराशा और हताशा अनुभूत करने के लिए बाध्य होते होंगे, अनुभूत करते होंगे, हाँ, अनुभूत करते ही हैं।

एकाकीपन क्या होता है,
ठुकराहट कैसी अनुभूति है,
अपने-आपको सम्भाल कर जीना कैसे सम्भवित है,
दुर्व्यवहार का शिकार बनना कैसा होता है,
अनिद्रा, क्रोध की व्याप्ति, थकान और
रगड़ कैसी संवेदनाएँ हैं,
स्नेह हेतु कोई मित्र न होना,
इस व्यथा के कारण क्रोधोन्माद होना,
हर सुबह, अकथनीय विगत समय की स्मृति
सह जग जाना कैसी प्रतीति है,
यह कोई समझा नहीं सकता,
व्यक्त नहीं कर सकता। (मेरेडिथ मेक्विन)

इस माह नूतन भर्ती हुए मरीजों में से एक, कि जिसे मूसलाधार वर्षा में आश्रम-मुख्यालय विस्तार में, एक गली में, एक पैर ऊपरी हिस्से से ले कर उँगलियों पर्यन्त, पलस्तर में पूर्ण मण्डलाकार आवृत्त हालत में लाया गया था, उसका अभिवादन है। वह अत्यन्त दुष्करता से स्वयं को अल्पतम मात्रा में ही इधर-उधर घसीटती कुछ हलन-चलन कर सकती थीह्नह्नमन पूर्णतया चूर-चूर, हृदय आहत और अर्धकाया अनावृत्त!

'होम' में भर्ती हो जाने के पश्चात्, सलाहकार हड्डी-विज्ञान के निष्णात डाक्टर ने उसके एक पैर में अनेक अस्थि-भंग (फ्रैक्चर), दूसरे पैर के नितम्ब की हड्डी का उपेक्षित फ्रैक्चर उपरान्त सिर के अनेक ज़ख्मों का निदान किया। उसकी कहानी उलझी हुई, अस्पष्ट और खण्डित थी, किन्तु गर्भित अर्थघटन द्वारा जानने में आया कि वह ओशीन, मध्य प्रदेश से आयी थी और उसके पति ने उससे स्वयं को छुड़ाने के लिए, उसे हरिद्वार की दिशा में जाने-वाली ट्रेन में बिठा दिया था। रात्रि में डिब्बे में अकेली पा कर उसकी कठोरतापूर्वक मारपीट हुई। अस्पताल में पलस्तर में आवृत्त पैर के साथ वह होश में आयी, उसके पूर्व की कोई स्मृति उसे नहीं थी। अस्पताल में उसकी पुनः भर्ती के अनन्तर उसे पुनः सड़क-गलियों में उतारा गया, जहाँ उसे ज़ख्मी उभय पैर और अति भारी पलस्तर के साथ निर्वाह करना था।

कभी-कभी मुझे मेरा जीवन जटिल जैसा तथा
ईश्वर ने मुझे प्रदान करनी चाहिए
उससे अधिक व्यथा और पीड़ा मुझे दी है
ऐसा लगता है।
किन्तु मेरे हृदय के अन्तस्तल में जानता हूँ कि

मुझे ईश्वर के आभार मानने चाहिए कि
अन्य कोई भी, कदापि, स्वप्न में भी नहीं सोचे
उतने सुयोगों का प्रवेशद्वार, पहुँच मुझे प्राप्य है
और इसलिए भी कि मुझे प्रसन्न होना चाहिए कि
भले ही वे मुझसे छीन लिये हैं,
तथापि मेरे स्वजन हैं।'' (मेरेडिथ मेक्घिन)

उसका नाम सरोजिनी देवी है और क्रमशः वह मनःशान्ति, सुरक्षा की अनुभूति कर रही है; फिर भले ही, उसकी शारीरिक तथा मानसिक स्वस्थता-प्राप्ति अपना समय माँगेगी।

''दुःख की अनुभूति कैसी होती है, यह मैं जानता हूँ; किन्तु सदा ऐसे भी लोग हैं जो मुझसे अधिक आहत होंगे। उन्हें मैं केवल मेरी प्रार्थनाएँ और सहानुभूति ही अर्पित कर सकता हूँ।'' (मेरेडिथ मेक्घिन)

परम कृपालु परमात्मा उसे गले लगाये और सान्त्वन दे तथा उसके कठोर, व्यथित जीवन को मृदु बनाये!

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है। **स्वामी शिवानन्द**

परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का १२२ वाँ जन्म-जयन्ती महोत्सव

मुख्यालय आश्रम में ८ सितम्बर २००९ को परमाराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का जन्म-जयन्ती महोत्सव यथोचित विधिविधान और पावनतापूर्वक मनाया गया। दिवस का शुभारम्भ प्रातःकालीन ध्यान-प्रार्थना तथा उसके साथ ही प्रभातफेरी से किया गया। विश्व-शान्ति तथा प्राणी-मात्र के कल्याणार्थ यज्ञशाला में विशेष हवन किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में पावन समाधि-मन्दिर में विषद रूप से भव्य पादुका-पूजा आयोजित की गयी। समाधि हाल पूर्ण रूप से भक्त-अतिथियों और अन्तेवासियों से भरा हुआ था। पूजा के उपरान्त भजन-कीर्तन तथा परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परमाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय तथा परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा गुरुदेव के जीवन और शिक्षाओं से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद प्रवचन हुए। 'गुरु-डिसाइपल रिलेशन्स', 'एलिवेटिंग ट्रूथ्स' तथा 'योगा ऑफ राइट कंडक्ट' शीर्षक अँगरेजी पुस्तिकाओं का भी इस पावन शुभ अवसर पर विमोचन किया गया।

सन्ध्या के समय श्री विश्वनाथ घाट पर गंगा माँ की विशेष पूजा-आरती सम्पन्न हुई। रात्रि-सत्संग में विशेष प्रवचन तथा भजन-कीर्तन हुए। आरती तथा विशेष प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का ९३ वाँ जन्म-महोत्सव

२४ सितम्बर २००९ को परमाराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज का ९३ वाँ जन्म-दिवस मुख्यालय शिवानन्द आश्रम में अत्यन्त श्रद्धापूर्वक पावनता से मनाया गया। सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पावन पादुकाओं की समाधि मन्दिर में पूजा की गयी। पूजन के तुरन्त बाद सत्संग हुआ। अपने श्रद्धेय गुरु महाराज को प्रेमपूर्ण श्रद्धांजलियाँ समर्पित करने के लिए एकत्रित भक्तों, शिष्यों, अतिथियों, ब्रह्मचारियों और संन्यासियों से समाधि हाल खचाखच भरा हुआ था।

सत्संग का शुभारम्भ 'जय गणेश' प्रार्थना, भजन और कीर्तन से हुआ। दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अनअनुकरणीय सर्वोच्च गुरु-भक्ति, अद्वितीय विनम्रता तथा दैवी करुणापूर्ण पावन जीवन-चरित

पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन दिया। परम पावन गुरु महाराज के प्रथम पुण्य-तिथि आराधना के ऑडियो तथा वीडियो डीवीडी एवं सीडी तथा हिन्दी भाषा के स्मारक-ग्रन्थ 'चिदानन्दम्' का भी इस पावन अवसर पर उन्मोचन किया गया।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने इस स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में परमाराध्य गुरु महाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन, कृतियों और शिक्षाओं पर आधारित एक नयी वेबसाइटह्लwww.chidananda.orgह्लके शुभारम्भ की घोषणा की।

रात्रि-सत्संग में, नवरात्रि-पूजन की षष्टि होने के कारण अन्य नियमित दुर्गासप्तशती पारायण के अतिरिक्त परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने परम पूज्य गुरु महाराज का १९९३ में दिया गया नवरात्रि-सन्देश भी पढ़ कर सुनाया।

आरती तथा प्रसाद-वितरण के साथ सत्संग सम्पन्न हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज जून तथा सितम्बर २००९ के अन्तर्गत सांस्कृतिक यात्रा पर गये।

१७ जून को स्वामी जी महाराज उड़ीसा में 'शिवानन्द सेन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल, खण्डगिरि, भुवनेश्वर' गये; लड़कों के इस उच्च विद्यालय की प्रबन्धक समिति के स्वामी जी महाराज अध्यक्ष हैं। स्वामी जी महाराज ने विद्यालय की गतिविधियों की भली-भाँति जाँच की तथा प्रबन्धक समिति के सदस्यों से महत्त्वपूर्ण एवं विषद विचार-विमर्श किया। उन्होंने विद्यालय की प्रार्थना-सभा में भाग लिया तथा विद्यार्थियों को भी सम्बोधित किया।

२० से २५ जून तक स्वामी जी महाराज दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के ही अंग, 'चिदानन्द हर्मिटेज' में रहे। उन्होंने आश्रम के विभिन्न पहलुओं तथा गतिविधियों को देखा। स्वामी जी महाराज ने दर्शनाभिलाषी भक्तों से भी बातचीत की।

२९ एवं ३० जून को स्वामी जी महाराज ने 'शिवानन्द सेन्टेनरी बॉयज़ हाई स्कूल' के रजत जयन्ती समारोह में भाग लिया। २६ जून को इसी से सम्बन्धित एक पत्रकार-सम्मेलन भी आयोजित किया गया था। इसमें भी श्री स्वामी जी महाराज सम्मिलित हुए।

इस विद्यालय की स्थापना ३० जून १९८४ को परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में, अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ की केन्द्रीय समिति द्वारा की गयी थी। दिव्य जीवन संघ के अन्तर्राष्ट्रीय परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने १९६६ में यह केन्द्रीय समिति बनायी थी, ताकि इसके द्वारा उड़ीसा में दिव्य जीवन संघ के कार्यक्रम प्रभावशाली ढंग से चलाये जा सकें, गुरुदेव के सन्देश व्यापक रूप में प्रसारित किये जा सकें, उड़ीसा की विभिन्न शाखाओं की गतिविधियों में समरसता लायी जा सके तथा विशेष रूप से परम पावन श्री स्वामी जी महाराज की उड़ीसा की यात्राओं के कार्यक्रमों की सुचारु रूप से देख-रेख की जा सके। यह अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ केन्द्रीय समिति, जो कि पंजीकृत समिति है, ने गुरुदेव के सिखाये आदर्शों के अनुसार नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को ले कर इस विद्यालय का व्यय-भार वहन किया। यह विद्यालय १९८४ में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करके प्रारम्भ किया गया है। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज कुछ वर्षों तक इसकी प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष भी रहे हैं। समय-समय पर यहाँ पधार कर वे विद्यालय और विद्यार्थियों को आशीर्वाद प्रदान करते रहे हैं। इस प्रकार अब तक यह विद्यालय दिव्य जीवन संघ की ही एक

शिशु-संस्था अथवा भगिनि-संस्था के रूप में कार्यरत है। इसे उड़ीसा राज्य सरकार द्वारा तथा अन्य विभिन्न उदार एवं सम्पन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों तथा सामान्य जनता द्वारा सहायता एवं समर्थन प्राप्त है।

विद्यालय को आरम्भ हुए २५ वर्ष पूर्ण हो जाने का यह रजत जयन्ती समारोह था। विद्यालय की गतिविधियों का इतिहास अति उत्कृष्ट है। अब तक मैट्रिक परीक्षा में विद्यार्थियों के २२ (बैच) समूह बैठे चुके हैं, जिनके परिणाम १०० प्रतिशत रहे हैं और उनमें भी अधिकांश प्रथम श्रेणी में ही सफल रहे हैं। शिक्षा नैतिक जीवन-मूल्यों पर आधारित होने के कारण इसका प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन एवं चरित्र पर बहुत अच्छा पड़ा है। सामान्य शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को भली प्रकार का नियमित जीवन जीना, चरित्र और व्यवहार में अनुशासन पालन करना, योगासनों का अभ्यास करना, नैतिक शिक्षा प्राप्त करना और भजन-कीर्तन करना सिखाया जाता है तथा प्रारम्भिक मूलभूत आध्यात्मिक साधना करना भी सिखाया जाता है, जिसे आगे के जीवन में और अधिक विकसित किया जा सकता है।

इस समस्त कार्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू था, 'नैतिक जीवन-मूल्यों पर आधारित शिक्षा' पर केन्द्रित अध्ययन-गोष्ठी (सेमिनार)। विभिन्न विषयों पर कुल चार सत्र थे : (१) नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षाह्वभारत में शिक्षा-पद्धति में सुधार की आवश्यकता; (२) आध्यात्मिक शिक्षाह्वअध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अध्यात्मीकरण पर ध्यान; (३) विद्यार्थियों के जीवन पर नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा का प्रभाव; तथा (४) आदर्श शिक्षाह्व हमारी भूमिका एवं हमारा उत्तरदायित्व। विभिन्न सत्रों के लिए सन्तों, मन्त्रियों, गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव, राजकीय उच्च पदाधिकारियों, विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों, सुप्रसिद्ध समाचार-पत्रों के सम्पादकों तथा प्राध्यापकों इत्यादि जैसे महत्त्वपूर्ण विशिष्ट शिक्षा विशारद एवं उच्च पदाधिकारी आये हुए थे। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज सभी सत्रों में अध्यक्ष पद पर रहे तथा उन्होंने सभी सत्रों में प्रवचन भी दिये। स्वामी जी महाराज ने प्रातःकालीन ध्यान सत्र में भी दोनों दिन भाग लिया तथा उन्होंने अपने प्रवचन में साधकों, भक्तों और विद्यार्थियों को व्यक्तिगत साधना के सम्बन्ध में निजी विचार अभिव्यक्त किये।

सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त भली-भाँति आयोजित किया गया था तथा सभी ने इसकी अत्यधिक सराहना की। कार्यक्रम पूर्णरूपेण सफल रहा।

१७ सितम्बर को विवेकानन्द केन्द्र, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में, उनकी 'अध्ययन-गोष्ठी' का सम्मेलन था। उनके अनुरोध पर स्वामी जी महाराज इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। स्वामी विवेकानन्द जी के प्रवचन 'भारत के सन्त' पर विचार-गोष्ठी थी। स्वामी जी महाराज ने विचार-विमर्श में भाग लेते हुए संक्षिप्त प्रवचन दिया, जिसकी सभी ने अत्यन्त श्लाघा की।

स्वामी जी महाराज पूर्वी पंजाबी बाग (ईस्ट पंजाबी बाग), नई दिल्ली की स्वामी शिवानन्द मैमोरियल इन्स्टीच्यूट के अध्यक्ष हैं। १९ सितम्बर को स्वामी जी महाराज ने इसके ट्रस्ट बोर्ड की मीटिंग में भी भाग लिया।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

प्रत्येक वर्ष भारतीय विद्याभवन तथा दिव्य जीवन संघ संयुक्त रूप से नई दिल्ली में 'स्वामी शिवानन्द स्मारक भाषण प्रतियोगिता' का संचालन किया करते हैं। इस वर्ष यह कार्यक्रम कस्तूरबा गान्धी मार्ग पर स्थित भारतीय विद्याभवन के 'भवन हाल' में ६ सितम्बर २००९ को आयोजित किया गया था। भारतीय विद्याभवन के निदेशक श्री जे. वीरराघवन ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने कार्यक्रम के लिए आशीर्वाद सन्देश भेजा। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज (महासचिव, दिव्य जीवन संघ)

स्मारक-प्रवचन देने के लिए आमन्त्रित किये गये थे। अतः श्री स्वामी जी महाराज कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा 'श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज प्रदत्त ज्ञान-सम्पदा तथा उसकी वर्तमान समय में सुसंगति' विषय पर प्रवचन दिया।

श्री स्वामी जी महाराज 'वसन्त विहार शाखा, नई दिल्ली' भी गये तथा भक्तों के साथ सत्संग में सम्मिलित हुए।

श्री स्वामी जी महाराज नई दिल्ली से तीन दिनों के लिए जयपुर गये तथा वहाँ दिव्य जीवन संघ की राजा पार्क तथा मालवीय नगर शाखाओं द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। श्री स्वामी जी महाराज ७ सितम्बर को विद्यालय के निदेशक श्री पी. डी. सिंह जी के निमन्त्रण पर टैगोर पब्लिक स्कूल, शास्त्री नगर में गये और वहाँ 'जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए नैतिकतापूर्ण जीवन की आवश्यकता' विषय पर प्रवचन दिया। ५०० के लगभग विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने यह प्रवचन श्रवण किया। श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

७ सितम्बर की सायं को श्री स्वामी जी महाराज ने दिव्य जीवन संघ, जयपुर की राजा पार्क शाखा द्वारा आयोजित सत्संग में प्रवचन दिया। ८ सितम्बर को श्री स्वामी जी महाराज ने श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज, श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज सहित राजा पार्क शाखा द्वारा आयोजित गुरुदेव के १२२ वें जन्म-दिवस पर भव्य पादुका-पूजा में भाग लिया तथा उसके उपरान्त 'गुरुदेव का जीवन और उद्देश्य' विषय पर प्रवचन दिया। सन्ध्या के समय मालवीय नगर शाखा द्वारा आयोजित सत्संग में भाग लेते हुए श्री स्वामी जी महाराज ने 'भक्तियोग' पर प्रवचन दिया।

'द एच. सी. एम. ऑफ राजस्थान स्टेट इन्टीट्यूट ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, जयपुर' द्वारा भी स्वामी जी महाराज को संस्था में पधारने तथा वरिष्ठ पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए प्रवचन देने के लिए आमन्त्रित किया गया था। तदनुसार, श्री स्वामी जी महाराज संस्था में गये तथा, 'मन, इसके रहस्य तथा नियन्त्रण' विषय पर प्रभावशाली प्रवचन दिया। निदेशक ने श्री स्वामी जी महाराज का धन्यवाद करते हुए समय-समय पर संस्था में पधार कर प्रशिक्षार्थी, पदाधिकारियों 'जीवन-मूल्यों' के सम्बन्ध में प्रकाश डालने वाले प्रवचनों से प्रबोधित करते रहने की प्रार्थना की। श्री स्वामी जी महाराज की इस यात्रा से राजस्थान की विभिन्न शाखाओं को प्रेरणा और सक्रियता प्राप्त हुई।

SPECIAL ANNOUNCEMENT

With effect from 28.09.2009, Vijaya Dasami Day, the Rates of Audio CDs, Audio CDs (Twin), Video CDs and DVDs are revised as under.

1. Audio CDs	**Rs. 50/- each**
2. Audio CDs (Twin)	**Rs. 90/- each**
3. Video CDs	**Rs. 60/- each**
4. Video CDs (Twin)	**Rs. 110/- each**
5. DVDs	**Rs. 60/- each**

—The Divine Life Society

सूचना

३६ वाँ अखिल आन्ध्र दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

३६ वाँ अखिल आन्ध्र दिव्य जीवन संघ सम्मेलन २४ से २६ जनवरी २०१० तक आन्ध्र प्रदेश के कडपा जिले के पुल्लमपेटा गाँव में एस. पी. वी. डी. सभा स्कूल एवं कॉलेज में होगी। सम्मेलन में भाग लेने का शुल्क (भोजन-आवास व्यय सहित) रु. ११/- है। Sri Shantalinga Reddy, Main Bazar, PULLAMPETA, KADAPA District, A.P (Mobile No: 09440077189) को भेजें।

सम्पर्क-सूत्र :

1) Sri Sai Babuji, Mobile No: 09304005462.

2) Sri Chengal Reddyji, Mobile No: 09444361330.

3) Sri Venkatasubba Naiduji, Mobile No: 09441131215.

सभी भक्त भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन, छत्तीसगढ़ तथा दिव्य जीवन संघ, नन्दिनीनगर शाखा का रजत-जयन्ती महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से छत्तीसगढ़ की दिव्य जीवन संघ की शाखाएँ तृतीय राज्य-स्तरीय सम्मेलन तथा नन्दिनीनगर शाखा की रजत-जयन्ती का महोत्सव १२ से १४ दिसम्बर २००९ तक मना रही हैं। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय से वरिष्ठ स्वामी जी साधकों को निर्देशन देने के लिए और सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारेंगे। सभी साधक-भक्त इस सम्मेलन और उत्सव में भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

पंजीकरण तथा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

१. श्री के. एस. ठाकुर, प्रधान
दिव्य जीवन संघ शाखा, नन्दिनीनगरह्ह४९००३६
जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ फोन : ०९३००५४४९०७

२. श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी फोन : ०९४०६०९३७४४

३. श्री स्वामी शिवदासानन्द जी फोन : ०९४२४२८४३४९

४. श्री पंकज चौबे फोन : ०७७१२४२५०९५

५. श्री के. एल. बरेथ फोन : ०९४२५५६७९४१

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

युवा शिविर तथा ३२ वाँ अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से ३२ वाँ अखिल उड़ीसा दिव्य जीवन संघ सम्मेलन २९ से ३१ दिसम्बर २००९ तक पोलसरा, जिला गंजाम, उड़ीसा में होगा। इसी कार्यक्रम के एक अंग के रूप में २७ से ३१ दिसम्बर २००९ तक युवा-शिविर भी होगा। आश्रम मुख्यालय के वरिष्ठ स्वामी जी इस शिविर तथा सम्मेलन में पधारेंगे। शिविर निःशुल्क है। सम्मेलन में प्रतिनिधियों के लिए शुल्क ३५० रुपये है।

सम्पर्क सूत्र :

(१) श्री जय चन्द्र नायक, प्रमुख प्रबन्धक, मो. ०९४३८८४९०४९

(२) श्री बिप्र चरण पात्रो, मो. ०९४३७०७८०४१

(३) श्री लक्ष्मी नारायण प्रूष्टी, मो. ०९८६१७५२८३१

(४) श्री भगवान त्रिपाठी, मो. ०९४०४३२००९१

विद्यार्थियों को युवा शिविर में भाग लेने के लिए तथा भक्तों को सम्मेलन में भाग लेने के लिए सादर निमन्त्रण है।

ह्रह्रद डिवाइन लाइफ सोसायटी

महत्त्वपूर्ण सूचना

कृपया सभी धन-राशि पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा चेक के द्वारा "The Divine Life Society," Shivanandanagar, Uttarakhand के नाम से भेजें। बैंक ड्राफ्ट अथवा बैंकर चेक का देय "Rishikesh" के अन्तर्गत निम्नलिखित बैंक में होना चाहिए :

"State Bank of India, Punjab National Bank, Punjab and Sind Bank, Union Bank of India, State Bank of Patiala, Oriental Bank of Commerce, Canara Bank, Indian Overseas Bank, Bank of India, Bank of Baroda."

* राशि भेजने का हेतु अवश्य लिखें। साथ ही पूरा पता और टेलीफोन नम्बर भी लिखें।

* यदि आपकी राशि रु. २००/- से अधिक हो, तो आप निजी चेक (Personal उहशार्शि) भेज सकते हैं।

* **कृपया राशि मनी आर्डर (Money Order) द्वारा भेजने की उपेक्षा करें।** मनी आर्डर इलैक्ट्रानिक माध्यम से भेजे जाते हैं और उनमें प्रेषक का धन भेजने का उद्देश्य या कोई अन्य सन्देश नहीं आता। अतः यदि मनी आर्डर द्वारा धन भेजें तो कृपया एक अलग पत्र द्वारा मनी आर्डर नम्बर और धन-राशि भेजने का उद्देश्य लिख कर भेजें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): माह अगस्त, २००९ में शाखा द्वारा परिचालित की गयी गतिविधियों में दैनिक सत्संग, महिलाओं के लिए दैनिक योगासन-वर्ग; तथा दिनांक ९ अगस्त के दृश्य-श्राव्य सत्संग के उपरान्त होम्योपैथिक औषधालयों द्वारा तथा जल-सेवा की समाज-सेवा; श्री गुरु पूर्णिमा तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधना को पादुका पूजन एवं श्री कृष्ण जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

आस्का (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति गुरुवार के चल-सत्संगों के आधिक्य में परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि को पादुका पूजा, राजकीय अस्पताल के मरीजों, अकिंचन जनों को फल-बिस्कुटों का वितरण, विशेष सान्ध्य-सत्संग सम्पन्न हुए।

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): (१) परम पूज्य श्री गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधनाह्वह्वब्राह्ममुहूर्त सभा, १०० प्रतिभागियों द्वारा लक्षार्चना सहित पादुका पूजा, अकिंचनों तथा ब्राह्मणों को वस्त्रों, औषधियों, अन्न तथा दक्षिणा का वितरण। समीपवर्ती ग्रामों के अनेक भक्तों सहित, दिन-भर का अखण्ड कीर्तन। (२) श्री कृष्ण जयन्तीह्वह्व ब्राह्ममुहूर्तीय जप-ध्यान, पादुका पूजा, संकीर्तन, ८० प्रतिभागियों द्वारा लक्षार्चना सहित श्री कृष्ण पूजा तथा स्तोत्र-गीता पाठ, प्रवचनों, कुष्ठरोगियों की संस्था के ३० निवासियों को अन्न-वस्त्र तथा आर्थिक दान। (३) समाज-सेवाह्वह्वअब तक, ११८ भिन्न ग्रामों में सत्संगों का आयोजन।

भिलाई (छत्तीसगढ़): श्री गुरु पूर्णिमा और गुरुदेव की ४६ वीं पुण्यतिथि-आराधनाह्वह्वपादुका पूजा सहित विशेष सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप।

ब्रह्मपुर (उड़ीसा): (१) नियमित गतिविधियाँह्वह्व दैनिक श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण, साप्ताहिक सत्संग प्रति गुरुवार को और शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन को पादुका पूजा, एकादशी की तिथियों को गीता-पारायण। (२) विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री गुरु पूर्णिमा और गुरुदेव के आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, प्रभातफेरी, पादुका पूजा में लक्षार्चना, नारायण-सेवा, आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी पी. सी. जिना जी द्वारा प्रवचनों सहित सान्ध्य-सत्संग। (३) साधना-सप्ताह का आयोजन।

बीकानेर (राजस्थान): (१) नियमित गतिविधियाँ ह्वह्वदैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रातःध्यान, स्वाध्याय, योगासन, 'साधना' पुस्तक के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग, मासिक द्विवार मातृ-सत्संग, सिक्ख धर्म की धार्मिक पुस्तकों का पठन, शिवानन्द-दिन को पादुका पूजा, चिदानन्द-दिन को हवन। (२) परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधनाह्वह्वअन्न, मिठाइयों, बिस्कुटों का अनाथालय के बालकों, मूक-बधिर शाला के छात्रों तथा अकिंचनों को वितरण। (३) श्री गणेश चतुर्थी और श्री कृष्ण जयन्तीह्वह्वविशेष पूजा और विशेष कार्यक्रमों का आयोजन। (४) श्री सुन्दरकाण्ड पारायणह्वह्वदिनांक ३ अगस्त को।

चण्डीगढ़, शिवानन्द आश्रम : (१) दैनिक गतिविधियाँह्वह्वदैनिक योगासन-वर्ग, दैनिक सान्ध्य-सत्संग,

स्वाध्याय पर बल देते हुए प्रति रविवार प्रभात का साप्ताहिक सत्संग। विशेष गतिविधियाँह्ह्दिनांक २७ अगस्त को आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी भक्तिभावानन्द जी और आदरणीय ब्रह्मचारी श्री आत्मनिष्ठ चैतन्य जी द्वारा ली गयी शाखा की मुलाकात के निमित्त एक चल-सत्संग, प्रति गुरुवार को महामन्त्र जप १ घण्टे पर्यन्त तथा दिनांक ७ अगस्त की सन्ध्या को ६ बजे से ले कर, दिनांक ८ अगस्त की प्रभात को ६ बजे पर्यन्त, १२ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र जप; शाखा द्वारा निष्पन्न समाज-सेवा में प्रति रविवार को ३०० अकिंचन जनों को अन्न-दान और निःशुल्य चिकित्सीय परामर्श और औषधियों का वितरण आदि का सातत्य रहा। परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्य-तिथि-आराधना को पूर्ण दिन सघन साधना-दिनह्ह्ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, प्रभातफेरी, गुरु महाराज का वीडिओ कैसेट द्वारा प्रवचन, आदरणीय श्री स्वामी धर्ननिष्ठानन्द जी द्वारा प्रवचन, भजन-कीर्तन तथा सब भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन।

चण्डीगढ़, रायपुर कुर्द : श्री कृष्ण जयन्ती के विशेष कार्यक्रमों में प्रभात में हवन और विशेष पूजा, अपराह्न में ४ घण्टों के कीर्तन के पश्चात् प्रसाद-सेवन तथा रात्रि को ८ बजे से ले कर रात्रि के १ बजे पर्यन्त भजन-कीर्तन, नृत्य के कार्यक्रम।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा की दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग, चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन की पादुका पूजाएँ, संक्रान्ति को पारायण आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त विशेष गतिविधियाँ निम्नानुसार थीं। (१) परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में ५ दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रमह्ह्गुरु महाराज के जीवन-चरित्र में से पठन तथा श्री रामचरित-मानस, श्रीमद् भागवतम् और गीता के पाठ। (२) पुण्यतिथि-आराधना-दिनह्ह्प्रभातफेरी, पादुका पूजा, गीता-पारायण, भजन-कीर्तन, सुप्रसिद्ध वक्ताओं के प्रवचन, २२ अकिंचन जनों को वस्त्र-वितरण। (३) श्री कृष्ण जयन्ती और श्री गणेश चतुर्थीह्ह्विशेष षोडशोपचार पूजा और सत्संग।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिलनाडु): शाखा ने 'चिदानन्द मेमोरियल होमेज' का विशेष कार्यक्रम रखा, जिसमें प्रार्थनाएँ, संकीर्तन, प्रवचन, प्रसाद-सेवन आदि समाविष्ट थे।

ढेंकानाल (उड़ीसा): परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि आराधनाह्ह्एक अनाथालय में विशेष सत्संग; बालकों को लेखन-सामग्री का तथा प्रसाद-वितरण।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँह्ह्दैनिक प्रातः तथा सान्ध्य आध्यात्मिक गतिविधियाँ, साप्ताहिक पादुका पूजा, शनिवार और रविवार के अधिष्ठाता देवताओं के स्तोत्र-पाठ। विशेष गतिविधियाँह्ह्परम पूज्य गुरु महाराज की पुण्यतिथि : २ घण्टों के अखण्ड कीर्तन के पश्चात् पादुका पूजा। श्रावण माह के सोमवार : विशेष पूजा, अभिषेक, २ घण्टों का कीर्तन। श्री कृष्ण जयन्ती को ३ घण्टे अखण्ड कीर्तन, पूजा, अभिषेक। श्री गणेश चतुर्थी को १० दिवसीय विशेष पूजा और एक घण्टे का कीर्तन।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा के श्री विश्वनाथ मन्दिर में त्रिवार पूजाएँ, दैनिक प्रातः सभाएँ सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक पादुका पूजा, प्रत्येक दिन के देवताओं को स्तोत्र-पाठ आदि नियमित गतिविधियों के आधिक्य में, (१) परम पूज्य गुरु महाराज के प्रथम पुण्यतिथि आराधना-दिन को ६ घण्टे अखण्ड कीर्तन तथा पादुका पूजा; (२) श्री कृष्ण जयन्ती को १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन, विशेष पूजा और भजन-कीर्तन; (३) श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा सम्पन्न हुई।

गुरदासपुर (पंजाब): दिनांक २४ अगस्त के विशेष सत्संग में आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी तथा आदरणीय प्रोफेसर श्री वासुदेव रणदेव जी के प्रवचन हुए।

जयपुर, मालवीयनगर (राजस्थान): शाखा द्वारा प्रति रविवार को हवन तथा भजन, प्रति मंगलवार तथा शुक्रवार को मातृ-सत्संग तथा मंगलवार को नारायण-सेवा का सातत्य रहा। परम पूज्य गुरु महाराज के प्रथम पुण्यतिथि आराधना-दिन को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, भजन-प्रस्तुति हुई। श्री गुरु पूर्णिमा को पादुका पूजन और श्री कृष्ण जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्नह्नहवन, भजन, दैनिक श्री देवी भागवत कथा, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, महामृत्युंजय जप, सत्संग का सातत्य रहा। आधिक्य में साप्ताहिक हवन-स्वाध्याययुक्त सत्संग, मातृ-सत्संग, स्वामी श्री शिवानन्द होम्योपैथिक औषधालय (८३७ मरीजों के उपचार माह अगस्त में), अकिंचनों को दैनिक अन्नदान, कुष्ठरोगियों की संस्था में मासिक आवश्यकतानुसार कोरे राशन का दान, दैनिक योगासन-वर्ग, स्वामी शिवानन्द पुस्तकालय, २६ अकिंचन विधवाओं को १५० रुपये की और ८० छात्रों को शिष्यवृत्ति की आर्थिक सहाय द्वारा समाज-सेवा सम्पन्न होती रही। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) प्रथम पुण्यतिथि दिन : पादुका पूजा, मन्त्र-जप, भण्डारा, ब्राह्मणों को वस्त्रदान एवं दक्षिणा तथा मिष्टान्न का दान और सब भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन। (२) श्री कृष्ण जयन्ती : विशेष रात्रि-सत्संग और मध्य रात्रि में आरती। (३) नन्द-उत्सव : विशेष सुशोभन, रंग-उत्सव, आरती, प्रसाद। (४) श्रीमद् भागवत कथा : दिनांक २९ अगस्त को आरम्भित हुई।

जयपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्नह्नदैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक और चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन और चिदानन्द-दिन के आध्यात्मिक कार्यक्रम एवं प्रसाद-सेवन। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) श्री गुरु पूर्णिमा : प्रातःकाल ५ बजे से अपराह्न ३ बजे पर्यन्त प्रभातफेरी, प्रार्थनाएँ, पादुका पूजा, स्वाध्याय, १०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन। (२) आराधना-दिन : समान ११ घण्टों पर्यन्त कार्यक्रम जिनमें ८० भक्तों ने भाग लिया।

काकिनाडा, माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को सम्पन्न हुए। दो चिकित्सीय शिविरें भी आयोजित की गयीं।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): शाखा द्वारा प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग, भगवद्गीता के स्वाध्याय सहित परिचालित हुए।

करडासिंगी (उड़ीसा): शाखा के, प्रथम पुण्यतिथि के निमित्त आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रमों में, आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी ने दो दिन कार्यक्रमों का परिचालन करके परम पूज्य स्वामी जी महाराज पर प्रवचन दिये। शाखा ने एक प्राथमिक शाला के छात्रों तथा अध्यापक-गण को भोजन, मिठाइयाँ तथा दक्षिणा दीं।

खातिगुडा (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक सत्संग, एकादशी की तिथियों को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण, महामन्त्र के १२ घण्टों के अखण्ड जप तथा नारायण-सेवा मासिक साधना-दिन को, भण्डारा के सहित एक चल-सत्संग आदि का सातत्य रहा। श्री गुरु पूर्णिमा और आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, प्रभातफेरी में महामन्त्र संकीर्तन, पादुका पूजा, सब भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन, १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप, रात्रि-सत्संग तथा साधना-सप्ताह में भागवत सप्ताह पारायण आदि सम्पन्न हुए।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा के साप्ताहिक सत्संग, मातृ-मण्डली द्वारा संकीर्तन तथा पुरुष-वर्ग और महिला-वर्ग के लिए योगासन-वर्ग चलते रहे। अकिंचन, रुग्ण महिलाओं

को आर्थिक सहाय एवं दैनिक दो घण्टों पर्यन्त स्वामी देवानन्द होम्योपैथिक औषधालय आदि शाखा की समाज-सेवा का सातत्य रहा।

लडवा (हरियाणा): दिनांक १९ अगस्त को शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी का 'ईश्वर की उपस्थिति का अभ्यास' एवं आदरणीय प्रोफेसर श्री वासुदेव रणदेव जी का 'श्रीमद्भगवद्गीता का सन्देश' विषयक जाहीर व्याख्यान तथा दूसरे दिन शाखा के सदस्यों के लिए उनके उद्बोधन आयोजित किये।

नाभा (पंजाब): शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी तथा आदरणीय प्रोफेसर श्री वासुदेव रणदेव जी की शाखा की मुलाकात के निमित्त १२५ प्रतिभागियों की उपस्थिति में विशेष सान्ध्य-सत्संग और अपराह्न में शाखा-सदस्यों के साथ सभा-मीटींग सम्पन्न किये।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के दैनिक डेढ़ घण्टों के प्रभातीय सत्संग में श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण और श्री लक्ष्मी अष्टोत्तर नामपारायण तथा दैनिक सान्ध्य-सत्संग में श्री रामायण का स्वाध्याय सम्पन्न होने के आधिक्य में श्री गुरु पूर्णिमा को विशेष सत्संग और पूजा आयोजित किये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा की दैनिक गतिविधियाँ—ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण और अन्य स्तोत्र-पाठ, दैनिक सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग, साप्ताहिक मातृ-सत्संग, प्रति माह के दिनांक तीन को ६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन, एकादशी की तिथियों को मातृ-सत्संग। विशेष गतिविधियाँ—(१) श्री कृष्ण जयन्ती : १२ घण्टों का अखण्ड मन्त्र-जप और ४ घण्टों का रात्रि-सत्संग। (२) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती : १५ रामायण-अध्ययन मण्डलियों की प्रतिभागिता के साथ, 'श्री रामायण पर परिसंवाद'। (३) श्री गणेश चतुर्थी : दिनांक २३ अगस्त से दिनांक १ सितम्बर पर्यन्त दैनिक पूजा और सत्संग।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा द्वारा दिनांक ९ अगस्त को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के आयोजित जाहीर प्रवचन में भारत के भूतपूर्व एडीशनल सोलीसीटर जनरल, श्री चन्द्रशेखरन् जी सम्मान्य अतिथि एवं राजधानी-शहर दिल्ली के अनेक विद्वान् और सुप्रसिद्ध महानुभाव उपस्थित थे।

पटियाला (पंजाब): शाखा के द्वारा आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी तथा प्रोफेसर वासुदेव रणदेव जी की मुलाकात पर आयोजित दिनांक २० अगस्त के विशेष सत्संग में भक्तों की विशाल संख्या के समक्ष उनके प्रवचन हुए। श्री स्वामी जी ने दूसरे दिन प्रभात में ध्यान-वर्ग को मार्गदर्शन दिया।

फुलबानी (उड़ीसा): शाखा की दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सत्संग, चल-सत्संग, शिवानन्द-दिन तथा चिदानन्द-दिन को पादुका पूजा के परिचालन के उपरान्त प्रथम पुण्यतिथि दिन को लक्षार्चना सहित पादुका पूजा तथा निराश्रयों को अन्न और वस्त्रों का दान एवं श्री कृष्ण जयन्ती को पादुका पूजा आयोजित हुए।

सालेपुर (उड़ीसा) : शाखा की दैनिक द्विवार पूजाएँ, ब्राह्ममुहूर्तीय तथा प्रभातीय सभाएँ, सायंकाल में एक घण्टे पर्यन्त अध्ययन-कक्ष, स्वाध्याय-भजन आदि के आधिक्य में शाखा ने साप्ताहिक सत्संग, स्तोत्रपाठ, विविध और महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ मासिक साधना-दिन, शिवानन्द-दिन, योगासन और ध्यान-वर्ग, साप्ताहिक द्विवार स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल की सेवाएँ (माह अगस्त में २६२ मरीजों की उपचार-सम्पन्नता) आदि गतिविधियों का सातत्य रहा। विशेष गतिविधियाँ—(१) श्री कृष्ण जयन्ती : श्री कृष्ण सहस्र नामावलीयुक्त अभिषेक, १२

घण्टों का अखण्ड जप, भजन-कीर्तन, श्रीमद् भागवतम् में से पठन, प्रसाद-सेवन सहित सान्ध्य-सभा। (२) ४१७ छात्रों की प्रतिभागितायुक्त एक स्थानिक कॉलेज में योगासन-शिविर।

सिकन्दराबाद (आन्ध्र प्रदेश): (१) प्रथम पुण्यतिथि आराधना-दिन के कार्यक्रमह्नह्नबहुसंख्यक भक्तों की उपस्थिति सहित सम्पन्न भव्य कार्यक्रमों में पादुका पूजा, प्रवचन, दिव्य भजन माला पुस्तक का विमोचन और निःशुल्क वितरण, १२ आध्यात्मिक सामाजिक संस्थाओं को प्रत्येकी रु. १०,०००/- का दान, एक छात्र को रु. ५,०००/- की छात्रवृत्ति तथा एक धर्मादा संस्था को ५०० किलो चावल का दान।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा की सब नियमित गतिविधियाँ सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही। प्रथम पुण्यतिथि आराधना को ५ दिवसीय कार्यक्रमों के आयोजन में, ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन-सभा तथा गुरु महाराज विषयक प्रवचनों युक्त सान्ध्य-सत्संग। पुण्यतिथि-आराधना-दिन को प्रभातफेरी, ध्यान, संक्षिप्त प्रवचन, योगासन, पादुका पूजा, श्रद्धांजलि प्रवचन, ११० छात्रों को मिठाई और लेखनसामग्री का वितरण, एक कुष्ठरोगियों की संस्था के ४० आमन्त्रितों को भोजन तथा ४०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन। सभा का समापन अपराह्न में ३ बजे हुआ। सान्ध्य-सत्संग में परम पूज्य गुरु महाराज के साथ विडियो-सत्संग तथा १२ घण्टों का अखण्ड जप सम्पन्न हुए।

वडोदरा (गुजरात): शाखा के साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन के आध्यात्मिक कार्यक्रम आदि का सातत्य रहा। विशेष गतिविधियाँह्न(१) श्री गुरु पूर्णिमा : भक्तों की विशाल संख्या की उपस्थिति में पादुका पूजा। (२) आराधना-दिन : विशेष प्रवचन। (३) माह के प्रथम और अन्तिम रविवार : दो सत्रों में ईशोपनिषद् का स्वाध्याय। (४) दिनांक १२ जुलाई को मार्गदर्शन युक्त ध्यान। (५) समाज-सेवा : दैनिक रूप से राजकीय अस्पताल में निर्धन मरीजों को निःशुल्क औषधियों का वितरण, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक औषधालयों द्वारा सेवाएँ तथा एक्युप्रेशर उपचार।

विक्रमनगर (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाओं, साप्ताहिक सत्संग तथा मातृ-सत्संग के आधिक्य में, परम पूज्य गुरु महाराज की प्रथम पुण्यतिथि-आराधना पर्व के निमित्त ९ दिवसीय श्री रामचरित मानस पारायण तथा पूर्णाहुति को हवन सम्पन्न हुए। पुण्यतिथि आराधना-दिन को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, सहस्रार्चना युक्त पादुका पूजा, गीता-पारायण, ३ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन, निर्धनों को अन्न, वस्त्रों का दान, प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन तथा सान्ध्य-सत्संग, श्री कृष्ण जयन्ती को दिन-भर के आध्यात्मिक कार्यक्रम; श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा आदि भी सम्पन्न हुए।

विदेशी शाखा

मॉरीशस, रोज हिल : शाखा प्रति सप्ताह चार बारह्नह्नबुधवार, गुरुवार, शनिवार और रविवार को सत्संग परिचालित करती है। योगासन-वर्ग दैनिक रूप से होता है। प्रति माह शिवानन्द-दिन को आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार सम्पन्न किया जाता है।

आप यात्री हैं और यह संसार एक धर्मशाला है। संसार में इस तरह रहिए जैसे आप धर्मशाला में रहते हों। यह समझ लीजिए कि यहाँ की कोई वस्तु आपकी नहीं है। **स्वामी शिवानन्द**

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

साधना

प्रस्तुत ग्रन्थ मूल अँगरेजी पुस्तक 'साधना' (SADHANA) का हिन्दी अनुवाद है जो परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अमर कृतियों में एक है।

लेखक के साधना-सम्बन्धी समग्र विचार इस ग्रन्थ में एकत्रित हैं। इसमें साधना का तात्पर्य, साधना के लक्ष्य और प्रक्रिया तथा साधना के विभिन्न मार्गों का सांगोपांग विवेचन है; साथ ही निवृत्ति-मार्गी साधकों के लिए ही नहीं, बल्कि सांसारिक गृहस्थों के लिए भी साधना का मार्ग इसमें विस्तार से बताया गया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि साधना कोई विशेष क्रियाकाण्ड नहीं है; बल्कि ईश्वर-प्राप्ति के लक्ष्य से किया गया प्रत्येक प्रयत्न साधना है। मनुष्य की रुचि और स्वभाव-भेद के अनुसार योग, वेदान्त, कर्म, भक्ति आदि विभिन्न पद्धतियाँ हैं; परन्तु मुख्य वस्तु अपने अन्दर विद्यमान ईश्वरत्व का दर्शन है। पुस्तक का क्षेत्र सर्वग्राही, भाषा बोधगम्य तथा विषय सर्वोपादेय है।

पृष्ठ : ६०० **आकार** : डेमी आक्टेवो **मूल्य** : रु. २३०/-

प्राप्ति-स्थान

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द पब्लिकेशन लीग
पत्रालय : शिवानन्दनगरह्ह२४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत